Vol 3 Issue 2 March 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 2,March. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

आधुनिकता और हिंदी उपन्यास साहित्य का अंतःसंबंध

रीना सुरेश पाटील

म्हैसाळ कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, म्हैसाळ तह. मिरज, जि. सांगली.

सारांशः

साहित्य के उद्भव और उसके विकास के पहलुओं को देखने के बाद साहित्य में आधुनिकता के प्रवेश को देखना आसान होता है। हिंदी साहित्य की हर विधा में आधुनिकता का प्रवेश अलग–अलग समय में पाया जाता है। आधुनिकता के उपन्यास में प्रवेश से उपन्यास विधा में नया मोड़ आया है। आधुनिकता की विशेषताएँ एवं प्रवृत्तियों का साहित्य में समावेश कालक्रमानुसार हुआ है। प्रारंभिक काल में आधुनिक प्रवृत्तियों की मात्रा कम परिलक्षित होती है किंतु धीरे–धीरे उसमें वृद्धि होकर वर्तमान समय के हिंदी साहित्य में आधुनिकता पर्याप्त मात्रा में उपस्थित है।

प्रस्तावना -

आधुनिकता का हिंदी साहित्य में प्रवेश –

आधुनिकता के हिंदी साहित्य में प्रवेश ने हिंदी साहित्य में विकास और परिवर्तन का युग लाया है। आधुनिकता के साहित्य में प्रवेश को लेकर विविध भ्रांतियाँ मिलती हैं। सन् 1837 में दिल्ली में एक लिथोग्रैफिक प्रेस तथा इससे पहले भी कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज से कुछ हिंदी पुस्तकें प्रकाशित हुई जिनमें से कुछ किताबों में आधुनिकता के तत्त्व पाए जाते हैं। डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने आधुनिकता के साहित्य में प्रवेश तथा उसके विकसित होते रूप को अलग दृष्टि से देखते हुए लिखा है कि ''हिंदी साहित्य के संदर्भ में आधुनिक विशेषण का प्रयोग सामान्यतः 1857 ई. के बाद के साहित्य एवं उसकी प्रवृत्तियों के लिए होता है।''[1] आधुनिकता का साहित्य में प्रवेश सामान्यतः 1857 के बाद होता है। उसके पहले कुछ विधाओं के साहित्य में आधुनिकता की प्रवृत्तियाँ पायी जाती है किंतु बिलकुल कम मात्रा में।

उपन्यास साहित्य में आधुनिकता के प्रवेश की चर्चा के विविध आयाम हैं। भारतेंदु ने आधुनिक हिंदी साहित्य के सभी अंगों में अभिवृद्धि करने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरू' है।''परीक्षा गुरू' को अंग्रेजी प्रभाव के कारण कुछ लोग हिंदी का प्रथम आधुनिक उपन्यास मानते हैं। इसका बहुत कुछ कारण तो यही है कि लेखक ने स्वयं भूमिका में अँग्रेजी प्रभाव की चर्चा की है।''[2] भारतेंदु युग का साहित्य कुछ हद तक आधुनिकता का हिंदी साहित्य है। भारतेंदु युग का कवि जहाँ एक ओर प्राचीनता का प्रेमी है वहाँ दूसरी ओर अर्वाचीनता का सूत्रधार भी। इस काल के कुछ कवियों ने छंदों के क्षेत्र में भी आधुनिकता लाने का प्रयास किया है। भारतेंदु युग में आधुनिकता का सिर्फ प्रवेश हुआ था जिसके कारण उस साहित्य में आधुनिकता के परिपक्व रूप को देखने की आशा करना सही नहीं है।

सन् 1950 से 1975 तक का समय द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है, जो प्रस्तुत युग के प्रधान महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से दिया गया है। शिवकुमार शर्मा कहते हैं–''इस युग में हिंदी साहित्य की आधुनिक परंपरा का यथेष्ट परिमार्जन तथा विकास हुआ। विशेषतः कविता, आलोचना तथा कथा साहित्य में इस युग में प्रौढता आयी।''[3] कई साहित्यकारों के साहित्य में सशक्तता के साथ आधुनिक बोध चित्रित हुआ है।

उपन्यासों में आधुनिकता का स्वरूप –

आधुनिकता के साहित्य में प्रवेश की परंपरा काफी समृद्ध है। उपन्यास साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश पहले से हुआ है। किंतु आधुनिक काल से यह परंपरा और अधिक समृद्ध हुई। इस प्रक्रिया ने स्वातंत्र्योत्तर काल के बाद गति ली। लेकिन साठोत्तरी काल के बाद जिस तरह आधुनिकता का उपन्यास साहित्य में प्रवेश होने लगा, आधुनिकता की दिशा ही बदल गई। आधुनिकता की सारी प्रवृत्तियाँ एवं विशेशताएँ इन उपन्यासों में पूर्ण रूप से विकसित हुई परिलक्षित होती है। वीरेंद्र जैन का 'डूब' उपन्यास बाँध बनाने की योजना के तहत कटते जंगलों और उन्हीं के आधारपर जीवनयापन करते मध्यप्रदेश के पहाड़ी इलाकों की जनजातियों का बेरोजगार होकर भूखे भटकने और इलाकों के डूबने का कटू सत्य आधुनिक बोध के सहारे उजागर करता है। प्रगति के नाम पर अधोगति करनेवाली यह योजनाएँ मनुष्य को अपने परंपरागत मूलभूत अधिकारों से वंचित कर रही है जिस पर वीरेंद्र जैन ने रोशनी डाली है। प्रस्तुत उपन्यास के सहारे उपन्यासकार आधुनिकता के दुष्परिणामों से तथा ऱ्हास हो रहे नैतिक एवं मानवी मूल्यों से हमें परिचित करा रहा है। आधुनिक उपन्यासों की परंपरा में प्रस्तुत उपन्यास अपना महनीय योगदान देता है।

Title : *आधुनिकता और हिंदी उपन्यास साहित्य का अंतःसंबंध*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *रीना सुरेश पाटील* **yr:2013 vol:3 iss:2**

कृष्णा सोबती के 'ऐ लडकी' उपन्यास में मृत्युशैया पर पडी एक बूढ़ी अम्मी जी, उसकी बेटी चित्रा और नर्स सूसन के बीच चल रहे संवादों का लिखित रूप है जिसमें आधुनिक विचारधारा के विविध पहलू दृष्टिगोचर होते हैं। चित्रा और सूसन खुद के बूते पर आत्मनिर्भर होकर जीवन जीनेवाली आधुनिक स्त्रियाँ हैं। विवाह, करिअर तथा स्त्री–पुरूष समानता को लेकर उनमें उभर रहे आधुनिक विचार निश्चित ही आधुनिक उपन्यासों की परंपरा को बदल देते हैं। मनोहर श्याम जोशी के 'हमजाद' उपन्यास में आधुनिक कालीन स्त्री–पुरूष यौन संबंधों का घिनौना रूप उभरकर आया है। इस उपन्यास में ऐसे कई रिश्ते चित्रित हुए हैं जिन्होंने अनैतिकता की सारी हदें पार कर दी है। स्त्री–पुरूष यौन संबंध इतने निम्न स्तर पर आ सकते हैं इसकी जीवंत मिसाल यह उपन्यास है। इन संबंधों ने सारे नैतिक और सामाजिक बंधनों को तिलांजलि दी है। इन यौन संबंधो में सिर्फ यौन संतुष्टि यह एकमात्र उद्दिष्ट है। पाश्चात्य संस्कृति की भोगवादी परंपरा की हिमायत करनेवाला यह उपन्यास आधुनिक हिंदी उपन्यास की परंपरा में अपनी अलग विशेषता को दर्ज करता है।

सुरेंद्र वर्मा के 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास की वर्षा वशिष्ट मध्यवर्गीय परिवार की होते हुए भी खुद के बूते पर अभिनय के क्षेत्र में करियर करने का सपना देखती है। वर्षा को इस राह पर अनेक मुसिबतों का सामना करना पडता है, बावजूद इसके वह सफल होती है। वर्षा का हर्ष नामक मित्र से प्रेम होना, उसके साथ अनैतिक संबंध, फिल्म क्षेत्र में करियर को सामने रखकर रखे गए नाजायज संबंध, हर्ष के साथ बिना ब्याह के सहजीवन तथा उसके मृत्यु के बाद भी उसके द्वारा गर्भ में पल रहे बच्चे का स्वीकार करने का धैर्य यह सभी बातें आधुनिक विचारों के हिमायती हैं। प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक स्त्री में अपने जीवन जीने की आत्मनिर्भरता तथा स्व के प्रति सचेत होनेवाली प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों की परंपरा में इस उपन्यास का योगदान कई स्तरों पर महत्त्वपूर्ण माना जाएगा।

मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब' उपन्यास आधुनिकता के नए प्रतिमानों के साथ उभरकर आता है। यह कठगुलाब बाँझपन का प्रतीक है। आधुनिक विचारसरणी ने कई विद्रुपताओं को जन्म दिया है और इसी कारण प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित हुए पाँच पात्रों–एक पुरूश और चार स्त्रियों को बाँझ बनाया गया है। नैतिक–अनैतिकताओं की सारी सीमारेखाओं को तोड़कर बन रहे अनैतिक संबंध जब वैद्यकीय क्षेत्र को ही चुनौति देते हैं तो उस उपन्यास को पढनेवालों का झकझोर उठना स्वाभाविक है। स्त्री–पुरूषों के आधुनिक संबंधों की चर्चा करनेवाला यह उपन्यास आधुनिक उपन्यासों की परंपरा में नए तेवर के साथ उपस्थित होता है। प्रभा खेतान के 'पीली आँधी' उपन्यास में नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट को चित्रित किया है। इस उपन्यास में चित्रित अनैतिकता एवं आधुनिकता ने सिर्फ नई पीढ़ी को ही नहीं पुरानी पीढ़ी को भी अपने शिकंजे में कसना शुरू किया है, इसका चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। उच्चभ्रु समाज की नाटकीयता तथा ऐयाशी प्रस्तुत उपन्यास में अधोरेखित हुई है, जिस पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव नजर आता है। परंपरागत मूल्यों एवं मान्यताओं को तिलांजलि देनेवाला यह उपन्यास आधुनिकता के शर्तों पर खरा उतरकर आधुनिक परंपरा को और अधिक पुष्ट करता है।

मैत्रीयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास स्त्री चेतना के आधुनिक स्वर को तीखे आवाज के साथ प्रस्तुत करता है। गाँव के स्तर पर हो रहे दलन, दमन एवं भ्रश्टाचार के विरूद्ध स्त्रियों ने खोला हुआ मोर्चा और उसमें उन्होंने हासिल की सफलता के आधुनिक परिवेश को द्योतित करनेवाला प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक स्त्री विचारधारा को पुष्ट करता है। सारंग और नैनी उपन्यास के प्रमुख स्त्री पात्र हैं। वे दोनों हिम्मत से गाँव के अत्याचारी गुट को चुनौति देती है और चुनाव जीत जाती है। पति के विरोध, धमकी, प्रताड़ना एवं प्रलोभन को ठुकराकर वह ऐसा कर पाती है। यह स्त्री चेतना की अलग विशेषता है।

प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में जड़बद्ध समाज व्यवस्था के विरोधी छेड़ी हुई मुहिम की शुरूआत को शब्दबद्ध किया है। इस उपन्यास की नायिका प्रिया बचपन में अन्य भाई–बहनों की अपेक्षा उपेक्षित रहती है। किशोरावस्था में सगे भाई से बलात्कार एवं कॉलेज जीवन में अध्यापक की हवस का प्रेम के नाम पर शिकार होती है। अनचाहे अमीर पति के साथ भी अनेक दिनों तक देह व संसार धर्म निभाती है। उसका मन जब अपराध बोध से ग्रसित होता है तब वह अपने मित्र से कहती है '' फिलिप ! अपने पैरों पर खड़ी एक औरत को स्वीकार कर पाने में अभी हमारे समाज का समय लगेगा।''[4] इससे तंग आकर अंत में वह अपने पैरों पर खड़े होने का फैसला करती है और परिवार के विरोध के बावजूद अपना व्यवसाय शुरू करती है। ससूर की रखेल से अपने वैध संबंध बनाती है और उसकी बेटी को अपने व्यवसाय में शामिल करती है। स्त्री जागरण की आई इस आँधी द्वारा स्त्री के आधुनिक विचारों एवं व्यवहारों की ओर प्रस्तुत उपन्यास प्रकाश डालता है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों की परंपरा में 'छिन्नमस्ता' के योगदान को अक्षुण्ण मानना होगा। सुरेंद्र वर्मा के 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में स्त्री–पुरूष यौन स्वच्छंदता को नए तेवर के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास में चित्रित हुई अमीर विवाहिताएँ अपने अलिशान घरों के सुसज्ज शैया कक्षों में, फाईव्ह स्टार होटलों के शानदार कमरों में सेक्स के लिए प्रशिक्षित नील को हमबिस्तर बनाती है। प्रस्तुत उपन्यास में पुरूष वेश्या की नवीनतम आधुनिक प्रवृत्ति को रेखांकित किया है।

अलका सरावगी का 'कलि–कथा : वाया बाइपास' आधुनिक उपन्यासों के शृंखला की सशक्त कड़ी है। इसमें इतिहास, समाज, अंगेजी हुकूमत, आजादी की लड़ाई, गांधीवाद तथा उसकी आधुनातन प्रासंगिकता, स्वातंत्र्योत्तर विकासकाल में बढ़ता पूंजीवाद, यांत्रिकता, मूल्यों के विघटन, विज्ञान और प्रोद्योगिकी के अतिवाद के खतरे आदि कई मुद्दों को समग्रता के साथ रोचक रूप से प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया गया है। किशोर बाबू के बाइपास सर्जरी के द्वारा अनेक विधियाँ अपनाकर प्रस्तुत उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारत की स्थिति एवं गति की सटीक अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक हिंदी उपन्यास परंपरा में प्रस्तुत उपन्यास मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। मोहनदास नैमिशराय के 'मुक्तिपर्व' उपन्यास में एक दलित परिवार के माध्यम से दलितों में आ रही चेतना एवं संघर्श के माध्यम से दलितों के विकास की नई राह की ओर दिशानिर्देश किया है। उपन्यास के बंसी से जब मास्टर साहब ने पूछा की सुनीत की आगे का पैसा तुम जुटा पाओगे क्या ?तब बंसी ने कहा ''हां साहब , सबकुछ करूंगा इसकी पढ़ाई के लिए। मैं तो चाहता हूँ मेरा सुनीत पढ़–लिखकर कुछ बनें। हमारी तो जिंदगी कट गई, पर ...''[5] दलितों में आ रही विकास की आँधी के पीछे शिक्षा एवं संविधान का मजबूत आधार है। आधुनिकता के इस सकारात्मक प्रवृत्ति के कारण प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक काल की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माननी होगी।

चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास में मुंबई के ट्रेड युनियनों और मजदूर संघटनों के जीवन संघर्षों को लेकर लिखा गया आधुनिक उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने औरत के दुःख, दर्द और नारी मुक्ति के सवाल को उपन्यास के केंद्र में रखा

है। प्रस्तुत उपन्यास की नमिता पांडे पुरूष वर्चस्ववादी समाज में आर्थिक स्वावलंबन की तलाश में भटकती जरूर है किंतु वह सिर्फ देह बनकर रह जाती है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका अंत में देह से मुक्ति पाकर अपना स्वयं का अस्तित्व बनाते हुई कहती है –''कभी–कभी नौकरी से भी ज्यादा सख्त जरूरत होती है अपने सम्मान की रक्षा।''[6] आधुनिक हिंदी उपन्यास की परंपरा में प्रस्तुत उपन्यास का योगदान काफी महत्त्वपूर्ण है। कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में आधुनिक भारत के विभाजन की त्रासदी उसके साथ–साथ भारत पर छाता जा रहा औपनिवेशिक साम्राज्य के खतरे को सकारात्मक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया है। व्यापक आयामों के साथ उपस्थित हुआ प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक हिंदी उपन्यासों की परंपरा में अपनी विशेष भूमिका निभाता है।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों में आधुनिकता की सारी प्रवृत्तियाँ एवं लक्षण सशक्तता के साथ चित्रित हुए हैं। इन उपन्यासों का आधुनिक संदर्भों में विशेष रूप से उल्लेख किया जाएगा। कई उपन्यास आधुनिक स्त्री में अपने जीवन जीने की आत्मनिर्भरता तथा स्व के प्रति सचेत होनेवाली प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हैं। परंपरागत मूल्यों एवं मान्यताओं को तिलांजलि देनेवाले यह उपन्यास आधुनिकता के शर्तों पर खरे उतरकर आधुनिक परंपरा को और अधिक पुष्ट करते हैं। दलितों में आ रही विकास की चेतना के पीछे शिक्षा एवं संविधान का मजबूत आधार है। आधुनिकता की इस सकारात्मक प्रवृत्ति के कारण विवेच्य उपन्यास महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माने जाते हैं। जीवन के प्रति सकारात्मक एवं आधुनिक दृष्टिकोण के कारण विवेच्य उपन्यास आधुनिक हिंदी उपन्यास की परंपरा को और आधिक उज्ज्वल बनाते हैं।

संदर्भ –

1.डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त – आधुनिक साहित्य और साहित्यकार, पृ. 5
2.ओंकारनाथ श्रीवास्तव – हिंदी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष, पृ. 289
3.शिवकुमार शर्मा – हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 458
4.प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता, पृ. 208
5.मोहनदास नैमिशराय – मुक्तिपर्व, पृ. 57
6.चित्रा मुदगल – आवां, पृ. 74

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net